कैदियों के जीवन में रंग

कैदियों के जीवन में रंग ! आदर्श केन्द्रीय कारा, बेउर के प्रशासन की यह पहल वाकई काबिले तारीफ है। पिछले कुछ सालों में यहां सीखचों में कैद लोगों के जीवन में उजाला लाने को जेल प्रशासन की ओर से पेंटिंग, अंग्रेजी व कम्प्यूटर शिक्षा आदि के क्षेत्र में प्रयास किये गए हैं। जेल प्रशासन की इन कोशिशों का कैदियों के जीवन पर असर भी पड़ा है , पर हाल ही में आधुनिक तकनीकी के बल पर कैदियों के जीवन को रंग देने की नयी कोशिश बेउर में सफलता की नयी कहानी गढ़ने को आतुर है। विकास की राह पर नित नयी ऊंचाई की ओर बढ़ रही सरकार ने पिछले दिनों बेउर जेल में बेकरी प्लांट लगाने की ठानी तो कारा प्रशासन ने पूरा साथ दिया। अब यह प्लांट चल पड़ा है। गृह सचिव अमीर सुबहानी ने कुछ दिन पूर्व इसका उद्घाटन भी कर दिया। यहां कैदियों द्वारा बनाई जा रही पाव रोटी का स्वाद बेउर ही नहीं दूसरी जेलों के कैदी भी ले सकेंगे। कैदियों को अपनी मेहनत की सुखद अनुभूति हो , इसके लिए बाकायदा यहां उत्पादित पाव रोटी की बिक्री के लिए राजधानी में आउटलेट भी बनाने की तैयारी की जा रही है। प्लांट में रोजाना चार सौ ग्राम के 15000 ब्रेड पैकेट तैयार हो रहे हैं। प्लांट पर 54 लाख खर्च हुए हैं। इसमें प्लांट भवन निर्माण में 24.73 लाख एवं मशीनरी पर 29.15 लाख रुपये की लागत आई है। प्रथम चरण में ब्रेड , बेक्ड बिस्कुट, पाव व केक का उत्पादन शुरू किया गया है। फिलहाल इससे 78 कैदियों को रोजगार मिला है। इनमें दोषसिद्ध बंदियों के साथ ही विचाराधीन कैदी हैं।

सरकार कैदियों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने की अपनी कोशिश के तहत मुजफ्फरपुर व भागलपुर की जेलों में पिसाई उद्योग को पहले ही प्रोत्साहन दे चुकी है। मुजफ्फरपुर की जेल में कैदियों द्वारा तैयार मसाला सूबे की दूसरी जेलों में भेजा जाता है। जेलों में कम्बल और गर्म कपड़े भी तैयार हो रहे हैं। कई जेलों में तो बढ़ईगिरी का भी काम हो रहा है। बक्सर

की जेल तो देशभर में अपने एक खास हुनर के लिए जानी जाती है। यहां कैदी उस विशेष किस्म की रस्सी को तैयार करते हैं जिसका प्रयोग फांसी देने में किया जाता है।

वैसे आमजनों के जेहन में अब तक जेलों की छवि सुधारगृह की बजाए नौसिखिया अपराधियों की प्रशिक्षणस्थली के रूप में ही रही है। लेकिन अब यह मिथक टूटने को है। सरकार जिस तरह तेजी से अपराध नियंत्रण व अपराधियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का तानाबाना बुन रही है उससे यह साफ है कि जल्दी ही सूबे की जेलों से हुनरमंद कैदी बाहर निकलेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नक्सली समस्या के समाधान को भी विकास की राह से जोड़ दिया है।